International Journal of Applied Research 2022; 8(6): 08-10

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(6): 08-10
www.allresearchjournal.com
Received: 08-03-2022
Accepted: 25-04-2022

डॉ. सुमन रघुवंशी
एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सुमन रघुवंशी
एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

राजनीति के कुशल खिलाड़ी सरदार–बल्लभ भाई पटेल

डॉ. सुमन रघुवंशी

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2022.v8.i6a.9802

सारांश
बल्लभ भाई पटेल एक ऐसा नाम है, जो स्वयं में ही लौहपुरूष का बोधक हो जाता है। एक ऐसा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिसका व्यक्तित्व शब्दों के जाल में बांधा नहीं जा सकता। एक किसान परिवार में जन्म लेकर जो विलायत जाने की दृढ़ इच्छा शक्ति रखता हो तथा बेरिस्टर बनकर धन व यश कमाने का जिसने संकल्प लिया हो, राजनीति में जिसको केवल अरूचि ही नहीं बल्कि उसे नफरत हो, किन्तु गांधी जी के सम्पर्क में आकर जीवन का नया अध्याय शुरू किया हो, गुजरात में अहमदाबाद नगर पालिका के चेयरमैन के रूप में सार्वजनिक जीवन की शुरूआत कर त्याग, बलिदान तथा अपनी क्षमता के कारण खेड़ा–सत्याग्रह और वारडोली–सत्याग्रह का सफल नेतृत्व किया हो, प्रदेश से निकलकर देश की राजनीति में पदार्पण किया हो, सन् 1931 में कॉंग्रेस का अध्यक्ष चुना गया हो, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में मील का पत्थर साबित होने वाली 1942 की क्रांति का सेनापति रहा हो, भारत का प्रथम उप प्रधानमंत्री तथा अविस्मरणीय गृहमंत्री पद सुशोभित किया हो। मैं संक्षेप में उनके जीवन के हर पहलू पर प्रकाश डालने का प्रयास करूँगी।

कूटशब्दः भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, राजनीति, गुजरात, किसान, गांधी जी, ब्रिटिश सरकार।

प्रस्तावना
अगस्त 1910 में एक बड़ा संकल्प लेकर वल्लभ भाई लंदन पहुंचे और दिन–रात अपनी पढ़ाई में जुट गये। उनके सामने बैरिस्टरी परीक्षा पास करने के सिवाय और कोई दूसरा लक्ष्य नहीं था। विलायत में एक सौम्य और गम्भीर विद्यार्थी के रूप में क्योंकि ख्याति थी। इसका परिणाम यह हुआ कि बैरिस्टरी की परीक्षा में वल्लभ भाई ने प्रथम श्रेणी एंव प्रथम स्थान प्राप्त किया और 50 पौंड का वार्षिक वजीफा भी हासिल किया। उस जमाने में किसी भारतीय के लिये यह गौरव की बात थी। सन् 1913 में वल्लभ भाई बैरिस्टरी परीक्षा पास करके भारत आये अहमदाबाद में अपनी वकालत प्रारम्भ की। जिस निर्भयता और साहस के साथ अंग्रेज जजों के सामने वल्लभ भाई बहस करते थे, यह दूसरों के वश की बात नहीं थी। अतः कम समय में ही वल्लभभाई न केवल सबसे प्रखर वकील माने जाने लगे वरन् उनकी धाक भी खूब जम गयी।
सच कहा जाये तो उन दिनों 1914 से 1920 तक के काल में अहमदाबाद की कोर्ट वल्लभ भाई की थी और बम्बई कोर्ट उनके बडे भाई विट्ठन भाई की। ऐसी स्थिति में यह स्वभाविक ही था कि गांधी जी की नजर वल्लभ भाई की ओर जाने लगी। वल्लभ भाई राजनीति से अपने को दूर रखना चाहकर भी उधर झुकते जा रहे थे। गांधी जी ने 1921 में जब असहयोग आन्दोलन का नारा दिया तब सबसे सक्रिय भाग वकीलों ने ही लिया। ऐसे में वल्लभ भाई कब तक 'बैरिस्टर पटेल' बने रहते? उन दिनों गुजरात में राजनीति और सामाजिक जागरण का काम 'गुजरात सभा' के द्वारा हो रहा था जिसकी स्थापना कॉंग्रेस की स्थापना से एक वर्ष पूर्व 1884 में हुयी थी। वल्लभ भाई 1915 में इसके सदस्य बने तथा गांधी जी के सम्पर्क में आये। उन्होंने गुजरात सभा के माध्यम से सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण ढंग से प्रवेश करने का निश्चय किया और अपने को गुजरात सभा के कार्यों के साथ जोड़ लिया। यहीं से उनके जीवन का एक नया अध्याय शुरू हुआ।
जब वल्लभ भाई पटेल अहमदाबाद नगर पालिका के चेयरमैन बने तब उन्होंने नागरिकों की मूल समस्या पर ध्यान दिया। ये समस्यायें थीं–जल, सफाई, पानी निकासी आदि। इनका उचित हल निकाला जिससे लोगों को विश्वास हुआ कि एक आदमी ऐसा भी है जो कहता ही नहीं है करता भी है। इसके अतिरिक्त बाढ़, महामारी, सूखा हर स्थिति का सामना सामाजिक स्तर पर करने की क्षमता वल्लभ भाई में दिखलायी। यह उनके द्वारा भविष्य में किये जाने वाले बड़े कार्यों की झलक प्रस्तुत करती है।

गुजरात के खेड़ा जिले में 1981 में भारी वर्षा के कारण सारी फसल बर्बाद हो गयी। उस समय के कानून के अनुसार दो तिहाई फसल की बर्बादी पर आधी लगान तथा 75 प्रतिशत बर्बादी पर पूरी लगान माफ करने का नियम था। अतः किसानों ने सरकार के पास लगान माफी हेतु प्रार्थना पत्र दिया। किसानों की हालत इतनी बदतर थी कि वे दाने–दाने को मोहताज थे, लगान कहाँ से देते। सरकार ने उनकी अर्जी नामंजूर कर दी तथा सख्ती के साथ लगान वसूल करने लगे। गांधी जी उन दिनों बिहार के चम्पारन नामक स्थान में किसानों की लड़ाई लड़ रहे थे। खेड़ा के किसानों ने गांधी जी को याद किया, वे बिहार से दौड़े हुये अहमदाबाद आये। गांधी जी ने गुजरात सभा में इस सम्बन्ध में अपने साथियों से सलाह मशविरा किया और ब्रिटिश सरकार से न्याय के लिये लोहा लेने का निश्चय किया। उन्होंने अपने साथियों से पूँछा, ''मेरे साथ खेड़ा चलने के लिये कौन तैयार हैं? उनके प्रश्न के उत्तर में जो व्यक्ति आगे आया वो थे वल्लभ भाई पटेल। दोनों खेड़ा पहुँचे तथा वहाँ गाँव–गाँव में पैदल भ्रमण शुरू किया।

अंत में जीत किसानों की हुयी। ब्रिटिश सरकार को झुकना पड़ा किसानों को लगान की पूरी छूट मिली। गांधी जी ने खेड़ा सत्याग्रह की सफलता का सबसे बड़ा श्रेय वल्लभ भाई पटेल को दिया । उनका कहना था, ''वल्लभ भाई मुझे न मिले होते, तो जो काम हुआ है वह हरगिज न होता।'' खेड़ा सत्याग्रह के बाद वल्लभ भाई सही मायने में कुन्दन बनकर निकले किसान के घर पैदा होकर वे बैरिस्टर बने थे, और वह भी शान–शौकत वाले बैरिस्टर। इस खेड़ा–सत्याग्रह ने पुनः किसान बना दिया। उनका यह रूप तथा रहन–सहन जीवन भर बना रहा।

सन् 1928 में ब्रिटिश सरकार ने वारडोली के किसानों पर 30 प्रतिशत लगान वृद्धि की घोषणा कर दी। वाडोली गुजरात के सूरत जिले में एक प्रमुख तहसील है। इसके पहले गुजरात के किसानों पर बाढ़ की भयंकर चपेट पड़ चुकी थी। खेड़ा में सरकार को मुँह की खानी पड़ी थी, लेकिन उससे सरकार ने कुछ भी सीख ग्रहण नहीं की। यहाँ के किसान जो वास्तव में लगान देने में भी असमर्थ हो रहे थे, उनके लिये यह कर बृद्धि अभिशाप बन गयी। वल्लभ भाई उन दिनों गुजरात के कई हिस्सों में आयी भयावह बाढ़ से पीढ़ित लोगों की सेवा में लगे हुये थें ऐसे समय ही वारडोली के पीड़ित लोगों का प्रतिनिधि मंडल उनके पास पहुँचा। प्रकरण की समीक्षा करने पर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि खेड़ा के किसानों के समान ही वारडोली के किसानों की समस्या भी जटिल है तथा अंग्रेज सरकार अन्याय पर उतर आयी है। वे 4 फरवरी 1928 को वारडोली पहुँचे तथा सत्याग्रह की शुरूआत की। ब्रिटिश सरकार इस विद्रोह को किसी भी रूप में दबाना चाहती थी।

इसी बीच पूरे देश में 12 जून 1928 को वारडोली–दिवस के रूप में मनाया गया। वारडोली के लोगों ने 24 घंटों का उपवास रखा। पूरे देश में उस दिन जन सभायें की गई और धन संग्रह किया गया, जिससे यहाँ के पीड़ित भाइयों की मदद की जा सके। वल्लभ भाई की चर्चा गाँवों, कस्बों और गुजरात की गलियों से होकर देश में एक बहादुर सिपाही के रूप में फैल गयी थी। उनकी संगठन शक्ति, लोगों को विश्वास में लेकर चलने की क्षमता तथा स्वयं की दृढता विचित्र थी। अंत में ब्रिटिश सरकार को झुकना पड़ा और उनकी शर्तो पर समझौता करने के लिये सरकार तैयार हो गयी। 2 अगस्त 1928 को सरकार ने समझौते पर अमल करने की घोषणा भी कर दी। पूरे देश में इस जीत की खुशी में 'वारडोली विजय दिवस' मनाया गया। वारडोली सत्याग्रह की सफलता पर गांधी जी ने वल्लभ भाई को वारडोली का सरदार' कहकर पुकारा, जिसे देश ने 'सरदार' के रूप में स्वीकार कर लिया।

गांधी जी ने जब नमक–सत्याग्रह का आह्वान किया, तो उस लड़ाई का आरम्भ सरदार पटेल की गिरफ्तारी से हुआ। गांधी जी ने इसके लिये वारडोली के दांडी नामक समुद्र को चुना। बापू ने दांडी के लिये अहमदावाद के साबरमती आश्रम से 12 मार्च 1930 को कूँच किया, उसके पांच दिन पूर्व ही सरकार ने वल्लभ भाई को गिरफ्तार कर लिया। 1930 से उनके जेल जाने का जो सिलसिला प्रारम्भ हुआ वह अनवरत् चलता रहा।

सन् 1931 में सरदार वल्लभ भाई पटेल कॉग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। उन्होंने जवाहर लाल नेहरू से काँग्रेस अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया। उस समय गांधी जी ने दाहिने और बायें हाथ के रूप में नेहरू और पटेल की जोड़ी प्रसिद्ध थी, जो आजादी के बाद तक चली। अतः स्वाभाविक ही था कि पूरे देश का ध्यान इस जोड़ी पर टिका हो। काँग्रेस अध्यक्ष के रूप में करॉची काँग्रेस अधिवेशन उल्लेखनीय है। इस अधिवेशन में सबसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव यह पारित हुआ कि राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ ही आर्थिक आजादी भी लोगों का मौलिक अधिकार होना चाहिये। यह प्रस्ताव आजादी के पश्चात देशी रियासतों की समाप्ति का आधार बना।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में 1942 का वर्ष स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने वाला वर्ष है। इसी वर्ष देश को दो नारे दिये– 'करो या मरो' तथा 'अँग्रेजो भारत छोड़ो'। कहा जाता है कि 1857 की क्रान्ति के बाद भारत में 1942 की क्रांति अत्याधिक प्रचंड थी। इस क्रांति की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि क्रांग्रेस महासमिति में इसे पारित करने वाले सभी जेल में थे आम जनता ने इसकी मशाल थाम ली थी। सरदार पटेल के जीवन में 1942 की इस क्रांति का विशेष महत्व है। इसलिये कि तमाम मत–भिन्नताओं के चलते यह प्रस्ताव महासमिति द्वारा पारित नहीं हो सका था। जवाहर लाल नेहरू तक का भ्रम था कि, 'यह उचित अवसर नहीं है', क्योंकि ब्रिटिश सरकार द्वितीय महायुद्ध में फँसी हुयी है। अतः इस समय आन्दोलन का इरादा छोड़ देना चाहिये। दूसरी विचार धारा को आंख मूँद कर अनुमोदित करने वालों के अगुआ सरदार वल्लभ भाई पटेल थे जिनका विश्वास था कि 'गांधी जी जब कह रहे हैं, तो इससे अच्छा अवसर और कोई दूसरा हो ही नहीं सकता। यह सरदार पटेल के वश की ही बात थी कि उन्होंने एक ऐसा वातावरण तैयार किया कि लोगों को लगने लगा था कि 'सरदार का कहना सही था'। उसका ही नतीजा हुआ कि 8 अगस्त 1942 को बम्बई में गांधी जी की मंशा के अनुसार जवाहर लाल नेहरू ने यह प्रस्ताव महासमिति के सामने रखा और सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अनुमोदन किया। इस तरह यह प्रस्ताव पारित हो गया।

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ किन्तु खंडित होकर। अंग्रेज जाते–जाते भारत को दो टुकड़ों में बॉट गये। हमारे नेता राष्ट्र के भविष्य को ध्यान में रखते हुये इस विभाजन के पक्ष में नहीं थे। सरदार पटेल भी गांधी जी के विचार से सहमत थे कि किसी प्रकार भी देश का विभाजन नहीं होना चाहिये। किन्तु बाद के दिनों में देश के अनेक हिस्सों में दंगो की जो भयानक आग लगी और भयंकर मार–काट शुरू हुयी उसने सरदार पटेल को भी हिला दिया। उन्होंने एक जगह कहा कि 'मानवता के खून की होली यदि बँटवारे से ही बन्द होनी है, तो वही हो जाये।' जवाहर लाल नेहरू ने भी इसे स्वीकार किया। व्यावहारिकता के सामने गांधी जी को भी यह मंजूर करना पड़ा। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि, यह स्थिति आने से पूर्व ही, देश के विभाजन की आशंका सरदार पटेल ने 'अंतरिम सरकार' के गठन के समय ही व्यक्त कर दी थी। उन्होंने 'संविधान–परिषद' की बैठक में बिना किसी छिपाव–दुराव के कहा था कि ''मैने विभाजन को अन्तिम उपाय के रूप में तब स्वीकार किया था, जब सम्पूर्ण भारत के हमारे हाथ से निकल जाने का खतरा पैदा हो गया था। मुस्लिम लीग के पांच सदस्य (जिनमें मुहम्मद अली जिन्ना भी थे ये) देश का बँटबारा करने की मंशा के साथ ही अंतरिम सरकार में सम्मिलित हुये थे'' इस प्रकार सही मायने में वे दूर दृष्टा,

भविष्य दृष्टा तथा राजनीति के कुशल खिलाड़ी थे। इसीलिये सरदार पटेल को 'चाणक्य' कहा जाता था।

सरदार पटेल स्वतंत्र भारत के प्रथम उप प्रधान मंत्री तथा गृहमंत्री बने। स्वतंन्त्रता के बाद देश के सामने कई बड़ी समस्यायें आयीं। सरदार पटेल ने बड़ी सूझबूझ से इन सभी पर काबू पा लिया। जिस कार्य के लिये सरदार पटेल को सदैव याद किया जायेगा, वह था देशी रियासतों का भारतीय संघ में विलय। जब अंग्रेज भारत छोड़ कर जाने लगे तो देशी रियासतों को यह आजादी दे गये कि वह चाहें तो स्वतंत्र रह सकते हैं या चाहें तो भारत या पाकिस्तान में मिल सकते हैं। अंग्रेजो का विचार था कि ये रियासतें भारत की स्वतंत्रता के लिये नासूर का काम करेगी और भारत मजबूत नहीं हो सकेगा। पर सरदार पटेल ने इस विकट समस्या को अपनी दृढ़ता और सूझबूझ से हल कर दिखाया और लगभग 600 छोटी–बड़ी रियासतों को भारतीय संघ का अटूट अंग बना कर भारत के मानचित्र को पूर्ण स्वरूप प्रदान किया। इसी लिये उन्हें भारत 'लौह पुरूष' कहा जाता है।

यहाँ पर उल्लेखनीय है कि देशी रियासतों में से 300 के करीब रियासतों ने तो लगभग स्वेच्छा से विलय–प्रस्ताव स्वीकार किया। कुछ रियासतों पर इसके लिये कड़ाई करनी पड़ी। इसमें सबसे बड़ी समस्या पैदा की हैदराबाद, त्रावणकोर–कोचीन और जूनागढ़ ने। हैदराबाद में पुलिस बल का प्रयोग करना पड़ां त्रावणकोर कोचीन के दीवान सर सी0पी0 रामास्वामी को मृत या जीवित पकड़ कर लाने के लिये सरदार पटेल ने जब दूत भेजा, तो उसके पहले ही वे देश छोड़ कर भाग गये। इस तरह की हलचल को देखकर ओर परखकर जूनागढ़ के नबाब ने घुटने टेक दिये। वल्लभ भाई को इसी लिये भारत का 'विस्मार्क' कहा जाता है।

इस प्रकार सरदार ने चाणक्य के साथ–साथ लौहपुरूष और विस्मार्क के कर्तव्य का निर्वाह भी किया, नहीं तो भारत टुकडों में विभक्त रहता। देश कभी भी उनके इस योगदान को भूल नहीं सकता है। इतिहास केवल तिथियों और घटनाओं से ही नहीं बनता है, बल्कि वह उन चरित्रों से बनता है जो उस काल के गौरव होते हैं। 'कहा जा सकता है'–

वज्रादपि कठोराणि मृदुली कुसुमादपि।
लोकोन्तराणां चेतांसि कोहिं विसातुमर्हति।।

ऊपर से अतिकठोर दिखाई देने वाले सरकार पटेल अन्दर से फूलो के सामन कोमल ओर मधुर थे सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के एक ऐसे ही योद्धा अथवा सेनापति थे, जिन पर हमें गर्व है। उनकी सशक्तता, दृढ़ता, संकल्पशक्ति, कार्यकुशलता का लोहा हर कोई मानता है। सरदार के बारे में कहा जाता है कि, ''सरदार जो कहते थे वही उनका आशय होता था और उनका जो आशय होता था वही वह कहते थे''। भारत के वर्ततान इतिहास में किसी एक व्यक्ति के लिये इतने नाम या विशेषण प्रयोग में नहीं आये होंगे जितने वल्लभ भाई पटेल के लिये। उनके लिये चार विशेषण प्रयोग में आते थे– सरदार, लौह पुरूष, चाणक्य और विस्मार्क।

कवि दिनकर की दो पंक्तियां सहसा याद आ रही हैं–
बड़ा वह आदमी जो जिन्दगी भर काम करता है
बड़ी वह रूह जो रोये बिना तन से निकलती है।''

सरदार पटेल केवल श्रद्धा या श्रद्धांजलि के ही पात्र नहीं हैं, वरन् भारत के लिये एक ऐसे आदर्श हैं, जिनका अनुसरण कर हमारी नयी पीढ़ी बहुत कुछ ग्रहण कर सकती है।

सन्दर्भ

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद लौहपुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल से संग्रहीत
2. नीतिशतकम – भवभूति।